श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2010

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
गुरुवार 19 अगस्त 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शुक्रवार 20 अगस्त 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
शनिवार 21 अगस्त 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **- ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 325 अंक : 1

चेतन अपनो रूप ...

चेतन अपनो रूप निहारो, नहिं गोरो नहिं कारो।
दर्शन ज्ञान मई चिन्मूरति, सकल करम तें न्यारो।।
।। चेतन अपनो रूप... ।।1 ।।

जाकी बिन पहिचान जगत में, सह्यो महा दुख भारो।
जाके लखे उदै ह्वै ततक्षण, केवलज्ञान उजारो।।
।। चेतन अपनो रूप... ।।2 ।।

करम जनित परजाय पाय, तुम कीनो तहाँ पसारो।
आपा पर सरूप न पिछानो, तातें मौ उरझारो।।
।। चेतन अपनो रूप... ।।3 ।।

अब निज में निज को अवलोक्यो, ज्यों ह्वै सब सुरझारो।
'जगतराम' सब विधि सुखसागर, पद पावो अविकारो।।
।। चेतन अपनो रूप... ।।4 ।।

– कविवर पण्डित जगतरामजी

छहढाला प्रवचन

गृहीत-मिथ्याचारित्र का स्वरूप और उसके त्याग का उपदेश

जो ख्याति लाभ पूजादि चाह धरि करन विविध-विध देहदाह ।
आतम-अनात्म के ज्ञानहीन जे-जे करनी तनकरन छीन ।।१४।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

आत्मा ज्ञानानन्दस्वरूप है, चारित्र उसका वीतरागभाव है, पुण्य-पाप आस्रव हैं, देह की चेष्टायें जड़ हैं - ऐसे तत्त्वों की भिन्नता के भान बिना सच्चा चारित्र नहीं होता। सम्यग्दर्शन रहित प्रवृत्ति मिथ्याचारित्र है। सम्यक्चारित्र तो वीतरागभावरूप धर्म है। चारित्र के वीतरागी आनन्द की अपेक्षा पुण्य को धर्मी जीव हेयरूप समझते हैं। जो प्रगटरूप से विषयों की भावनासहित तपश्चरणादि करते हैं, उनको तो पाप-बंध होता है; परन्तु शुभराग से तपश्चरणादि करें तो भी यदि आत्मा का ज्ञान नहीं है, तो अन्तर में कहीं मानादिक की वृत्ति विद्यमान है।

जो नव ग्रैवेयक में जाते हैं, वे सच्चे देव-गुरु को मायाचार के बिना मानते हैं; परन्तु अनुभवरूप भेदज्ञान बिना अन्तरंग अभिप्राय में राग की चाह रह जाती है, सूक्ष्म राग के वेदन में उनको धर्मबुद्धि रहती है; अतः राग से भिन्न होकर स्वभाव का अनुभव नहीं करते। जो राग को धर्म माने, वे राग के फल की इच्छा भी कैसे छोड़ें ? अर्थात् नहीं छोड़ते; अतः श्री कुन्दकुन्दस्वामी समयसार में कहते हैं कि वे अज्ञानी जीव मोक्षहेतु धर्म को नहीं जानते और भोगहेतु धर्म का (पुण्य का) सेवन करते हैं - ऐसे जीव भी संसार में ही रुलते हैं; जो मिथ्यात्वपोषक कुदेव-कुगुरु-कुधर्म का सेवन करते हैं, वे तो गृहीत मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-चारित्र से संसार में बहुत त्रास पाते हैं, तीव्र दुःख सहते हैं; अतः हे जीव ! तू ऐसे मिथ्याभावों को छोड़।

जिसको सम्यग्दर्शन और भेदज्ञान नहीं है, उसको यह ज्ञात नहीं है कि आत्मा अपने अन्तर में कैसे प्रसिद्ध होता है ? अतः उसको बाह्य प्रसिद्धि की भावना रहती है। धर्मीजीव को सम्यग्दर्शन में अतीन्द्रिय आनन्द के स्वादसहित भगवान आत्मा प्रसिद्ध हुआ है, यही सच्ची प्रसिद्धि है, इसी को 'आत्मप्रसिद्धि' कहते हैं। जगत में प्रसिद्धि हो तो भी उसमें आत्मा को क्या लाभ ? जिसने अपने अन्तर में आत्मा की प्रसिद्धि (अनुभूति) नहीं की और बाह्य में बहुत प्रसिद्धि हो गई तो इससे उसको क्या लाभ हुआ ? कुछ भी नहीं। और जिसने स्वानुभूति द्वारा अपने अन्तर में आत्मा को प्रसिद्ध किया, उसको जगत् में प्रसिद्ध होने का क्या प्रयोजन रहा ? ज्ञानी की अंतरंग अनुभूति की महिमा अद्भुत है। अन्तर की स्वानुभूति में उसको भगवान परमात्मा प्रसिद्ध हो चुका है; बाह्य प्रसिद्धि से उसको कोई प्रयोजन नहीं है। जिसको आत्मा की प्रसिद्धि करना नहीं आता और जिसकी आत्मा मोह से ढकी हुई है तथा जिसको सच्चे देव-गुरु-धर्म का भी निर्णय नहीं है, वह जो भी मिथ्या आचरण करता है, वह सब गृहीत मिथ्याचारित्र है; उसको दुःख का कारण जानकर त्याग करो और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र द्वारा आत्मा को प्रसिद्ध करो। अब अन्तिम छंद में मिथ्यात्वादि को छोड़कर आत्म हित के मार्ग में लगने की प्रेरणा देते हैं -

हे भाई ! दीर्घकाल तक मिथ्याभावों के सेवन से तुम दुःखी हुए; परन्तु अब दुःख से छूटने के लिये संतों द्वारा दिखाये आत्महित के मार्ग को अंगीकार करके, मिथ्याभावों का सेवन पूर्णतया छोड़ दो और आत्मा को सुख के पंथ में लगाओ।

(छंद -१५)

ते सब मिथ्याचारित्र त्याग, अब आतम के हितपंथ लाग।
जगजाल-भ्रमण को देहु त्याग, अब दौलत निज आतम सुपाग।।१५।।

जीव को चार गति के सर्व-दुःखों का कारण मिथ्यादर्शन-मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र है - यह दिखाकर श्रीगुरु महाराज कहते हैं कि हे जीव ! ऐसे मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र को तुम छोड़ दो और सम्यग्दर्शनादि प्रगट करके आत्महित के पथ में लग जाओ। अनादि से मिथ्यात्वादि भावों के सेवन से तुम दुःखी हुए, अब तो आत्मा के हित का उपाय करो ! - '**अब आतम के हितपंथ लाग।**' इस जगत के मोहजाल

में रुलना छोड़कर चैतन्य-दौलत से भरे हुये निजात्मा में लीन होओ। कवि अपने आप को संबोधन करके कहते हैं कि हे दौलत ! अब तू अपनी आत्मा की आराधना में लीन हो और संसार के मोहजाल को छोड़।

अहा ! जीवों को हितपंथ में लगाने के लिये सन्तों ने बड़े अनुग्रह से उपदेश दिया है। मिथ्यात्वादि भावरूप संसार के जाल में फंसकर जीव चार गति में रुलता है और दुःखी होता है। उसका दुःख छुड़ाकर सुख का अनुभव कराने के लिये श्रीगुरु ने यह वीतराग-विज्ञान का उपदेश दिया है।

'तातें दुःखहारी सुखकार, कहें सीख गुरु करुणाधार'
'ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्यान।'

हे भाई ! तुम्हारे कल्याण के लिये इस उपदेश को तुम अंगीकार करो। आत्महित के अभिलाषी मुमुक्षु जीवों ! गृहीत-अगृहीत सभी मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र को छोड़कर और शुद्ध सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को अंगीकार करके आत्मकल्याण के मार्ग में लगो, पराश्रयभावरूप इस संसार में भटकना छोड़ो, मिथ्यात्वादि भावों का सेवन छोड़ो और सावधान होकर आत्मा को रत्नत्रय की आराधना में जोड़ो।

श्री कुन्दकुन्दस्वामी नियमसार में कहते हैं कि रे जीव ! -

मिथ्यात्व आदि भाव को चिरकाल भाया है तूने।
सम्यक्त्व आदि भाव को भाया नहीं कबही तूने।।

अरे जीव ! अब ऐसे मिथ्यात्वादि दुःखदायी भावों को छोड़ दे और आत्मकल्याण के मार्ग में लग जा। मैं देह व राग से भिन्न ज्ञानानंदस्वरूप हूँ - ऐसा श्रद्धा-ज्ञान-अनुभव करके आत्महित को साध ले।

भाई ! ऐसा मनुष्यजीवन पाकर तूने आत्मानुभव किया या नहीं ? अपनी आत्मा को जानकर उसका उदय किया या नहीं ? कि परकीय चिन्ता में ही जीवन खो दिया ? अरे ! अबतक तो आत्मा को भूलकर मिथ्याभावों के सेवन से जीव ने स्वयं अपना अहित किया; उसमें भी कुदेव-कुगुरु-कुधर्म के सेवन से आत्मा का अत्यन्त अहित हुआ और वह दुःखी हुआ; अतः हे जीव ! अब तो तू सच्चे देव-गुरु-धर्म को पहचानकर सम्यक्त्वादि भाव प्रगट कर। ऐसा करने से तेरा परम हित होगा। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

जीव के विभावस्वभाव नहीं है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 39 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो खलु सहावठाणा णो माणवमाणभावठाणा वा।
णो हरिसभावठाणा णो जीवस्साहरिस्सठाणा वा।।३९।।

(हरिगीत)

अरे विभाव स्वभाव हर्षाहर्ष मानपमान के।
स्थान आतम में नहीं ये वचन हैं भगवान के।।३९।।

जीव को वास्तव में स्वभावस्थान (विभावस्वभाव स्थान) नहीं हैं, मानापमान भाव के स्थान नहीं हैं, हर्षभाव के स्थान नहीं हैं या अहर्ष के स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

शुद्धजीव में शुभपरिणति, शुभकर्म और हर्ष के स्थानों का अभाव है।

शुद्धजीवास्तिकाय के शुभपरिणति का अभाव होने से शुभकर्म नहीं है, शुभकर्म का अभाव होने से संसार-सुख नहीं है और संसार-सुख का अभाव होने से हर्ष-स्थान नहीं है।

दया, दान, भक्ति, पूजा, स्वाध्याय, पंचमहाव्रतादि का भाव शुभपरिणति है। वह शुभपरिणति जीव की एकसमय की पर्याय में होती है। यदि स्वभावदृष्टि से देखा जाय तो शुद्धजीव के शुभपरिणति का अभाव है। शुभपरिणति का अभाव होने से शुभकर्म का भी जीव में अभाव है। जीव में तीर्थंकर पुण्य-प्रकृति का अभाव है; क्योंकि जिस परिणति से वह कर्म बंधता है, उस परिणति का जीव में अभाव है। भक्ति और भक्ति में निमित्त भगवान का भी जीव में अभाव है। पूर्व में किये शुभभावों के फल में पुण्य-बंध हुआ, तदनुसार सामग्री उपलब्ध हुई और उससे जीव हर्ष की कल्पना करता है - ऐसा कोई कहे तो वह पर्याय का परिणाम है, उस परिणाम के

साथ कर्म और सामग्री का निमित्तरूप से सम्बन्ध है तथा हर्ष की कल्पना भी पर्याय में करता है। शुद्धजीव में शुभपरिणति नहीं है, कर्म नहीं है, संसार-सुख नहीं है तथा हर्ष की कल्पना भी नहीं है। शुद्धस्वभाव तो इन सभी से रहित है।

धर्मीजीव के अनुकूल संयोग और हर्ष के परिणाम होने पर भी रुचि शुद्धस्वभाव के ऊपर है।

धर्मी जीव मकान के वास्तु-प्रसंग (गृह-प्रवेश), पुत्र के लग्नोत्सव अथवा अर्थोपार्जन होने के समय भी हर्ष के अभावस्वरूप स्वभाव का साधन कर रहा है। कोई कहे कि पचास लाख रुपये मिले, इसलिए हर्ष हुआ ? पूर्व में कर्म बांधा था; अतः पुत्र-प्राप्ति हुई कि नहीं ? तो कहते हैं कि हे भाई ! हर्ष के परिणाम मात्र एकसमय की अवस्था में हैं और पर के कारण नहीं; किन्तु अपने ही कारण हैं और उन परिणामों का त्रिकालीस्वभाव में अभाव वर्तता है। धर्मीजीव के हर्ष के परिणाम होने पर भी क्षण-क्षण में शुद्धस्वभाव का साधन हो ही रहा है। हर्ष की पर्यायबुद्धि धर्मीजीव के नहीं होती। दुकान का मुहूर्त्त किया हो और घर पर मिष्ठान्न बन रहे हों, तथापि दृष्टि जड़पदार्थ के ऊपर अथवा हर्ष के भाव के ऊपर नहीं है। शुद्धस्वभाव पर ही रुचि है और वही धर्म है।

मिथ्यादृष्टि जीव के पर की तथा हर्षादि विकार की रुचि होने से ''स्वधर्मत्याग'' वर्तता है।

अज्ञानी जीव तो परपदार्थ को अपना मानकर हर्षित हो जाता है और हर्ष जितना ही आत्मा को मानकर मिथ्यात्व का सेवन करता है। अज्ञानी जीव सामायिक में हो, ''तावकायं-ठाणेणं'' इत्यादि सामायिक-पाठ के शब्द बोलता हो, दुकान से निवृत्ति ली हुई दिखाई देती हो; परन्तु यह शब्द मैं बोल सकता हूँ, शरीर को स्थिर रख सकता हूँ, शब्द बोले गए, शरीर स्थिर रहा, किंचित् कषाय मन्द होने से धर्म हो गया, सामायिक हो गया; इसप्रकार पर्यायबुद्धि करते हुए उसे शुद्धस्वभाव की रुचि नहीं है; अतः वह मिथ्यात्व का ही सेवन करता है, उसको धर्म नहीं होता। शुद्धस्वभाव की रुचि नहीं होने के कारण स्वभाव का अनादर वर्त रहा है और साथ ही पुण्य-पाप, हर्ष-शोक का आदर भी वर्त रहा है; अतः उसके स्वधर्म का त्याग है अर्थात् स्वभाव का त्याग वर्तता है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आप सत् समझने की इतनी महिमा गाते हैं, उससे लाभ क्या है ? हम तो व्रतादि करने में लाभ मानते हैं।

उत्तर : स्वभाव की रुचिपूर्वक जो जीव सत् समझने का अभ्यास करता है, उस जीव को क्षण-क्षण में मिथ्यात्वभार मन्द पड़ता जाता है, एक समय भी समझने का प्रयत्न निष्फल नहीं जाता। अज्ञानी जीव व्रतादि में धर्म मानकर जो शुभभाव करता है, उसकी अपेक्षा सत् समझने के लक्ष्य से होनेवाला शुभभाव ऊँची जाति का है। व्रतादि में धर्म मानकर जो शुभभाव करता है, उसके तो अभिप्राय में मिथ्यात्व पुष्ट होता जाता है, जबकि सत् समझने के लक्ष्य से प्रतिक्षण मिथ्यात्व हीन होता जाता है और जिसे सत् समझने में आ जाय, उसकी तो बात ही क्या ?

प्रश्न : तत्त्वों का स्वरूप अनुमानज्ञान से विचार में आता है या अनुभव से - कृपया स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर : प्रयोजनभूत नवतत्त्वों का स्वरूप पहले अनुमान से ज्ञान में आता है, पश्चात् अनुभव होता है। जिसप्रकार प्रथम शकुन देखने में आता है, तत्पश्चात् ही उसका फल जाना जाता है न ? उसीप्रकार प्रथम अनुमानज्ञान से ख्याल में आता है, पश्चात् अनुभव होता है।

प्रश्न : निर्मलपर्याय को तो अन्तर्लीन कहा है न ?

उत्तर : वह तो स्वसन्मुख झुकी है, इसलिए उस पर्याय को अन्तर्लीन कहा है; परन्तु इतने मात्र से वह कहीं ध्रुव में मिल नहीं गई है। ध्रुव के आश्रय से द्रव्यदृष्टि प्रगट होने के पश्चात् चारित्र की शुद्धि भी पर्याय के आश्रय से नहीं होती। त्रिकाली अन्त:तत्त्व जो ध्रुवतल दल है, उसके आश्रय से ही चारित्र की शुद्धि होती है। यह वस्तुस्थिति है, भगवान की वाणी है, यह उपदेश भेदज्ञान की पराकाष्ठा का है। प्रभु ! निर्मल पर्याय बहिर्तत्त्व है, वह निर्मल पर्याय के आश्रय से टिके नहीं, बढे नहीं, वह तो अन्त:तत्त्व जो ध्रुवतत्त्व, उसके ही आश्रय से प्रगट होती है, टिकती है, बढती है। दया-दानादि के शुभ परिणाम तो मलिन बहिर्तत्त्व हैं और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के परिणाम निर्मल बहिर्तत्त्व हैं। द्रव्यदृष्टि तो एक शुद्ध अन्त:तत्त्व का ही अवलम्बन लेती है।

समाचार दर्शन -

ग्रीष्मावकाश में शिक्षण शिविरों की धूम

मई एवं जून माह में पूरे देश में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। भिण्ड, नागपुर, सिलवानी, नौगाँव-छतरपुर, अलवर, अमरमऊ, उदयपुर, जबलपुर, अजमेर, देवलाली-नासिक, जयपुर एवं इन्दौर में लगाये गये ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविरों के संक्षिप्त समाचार यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन दो महिनों में लगभग 275 स्थानों पर लगे शिविरों के माध्यम से 150 विद्वानों ने लगभग 35-40 हजार बालक-बालिकाओं में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण किया। बालकों के अतिरिक्त हजारों साधर्मियों ने ज्ञान गंगा में स्नान किया।

1. भिण्ड (म.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट देवनगर भिण्ड, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर तथा श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाँक 5 से 13 जून, 2010 तक लगभग 101 स्थानों पर छठवें बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इन शिविरों में ब्र.रवीन्द्रकुमारजी अमायन, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र.कल्पनाबेन के अतिरिक्त श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन मंगलायतन, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन सोनागिरि के लगभग 185 विद्वानों द्वारा महती धर्म प्रभावना हुई।

दिनाँक 5 जून को सीमंधर जिनालय देवनगर भिण्ड में शिविर का उद्घाटन श्री के.के.जैन फरीदाबाद के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रजी जैन रानीपुरावालों ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ.अशोककुमारजी जैन मंचासीन थे। शिविरार्थियों को दी जानेवाली किट का विमोचन श्री नरेशचन्दजी जैन पानीपत ने किया।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री कल्याणकुमारजी जैन दिल्ली ने किया।

इन शिविरों के आयोजन हेतु मुख्यरूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया गया था, जहाँ विद्वान नहीं पहुँच पाते हैं। शिविरों के माध्यम से लगभग 13 हजार बालक-बालिकाओं ने तथा लगभग 11 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविरों के माध्यम से किशोर उम्र के सैंकड़ों बालक-बालिकाओं ने दिगम्बर जैन समाज में माता-पिता की सहमति से ही विवाह करने का संकल्प-पत्र भरा। **- सुरेशचंद जैन**

2. नागपुर (महा.) : दिनाँक 12 से 20 जून तक श्रीमती सूरजदेवी धर्मचन्दजी देवड़िया परिवार नागपुर एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में सामूहिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

विदर्भ (महाराष्ट्र) के 6 जिलों - नागपुर, अमरावती, अकोला, वर्धा, यवतमाल, चंद्रपुर तथा **महाकौशल (मध्यप्रदेश) के 6 जिलों** - छिन्दवाड़ा, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, बैतूल, सिवनी, जबलपुर में एकसाथ लगाये गये इस शिविर के माध्यम से लगभग 2600 शिविरार्थियों

ने अहिंसा-1, अहिंसा-2 की परीक्षा देकर प्रमाण-पत्र प्राप्त किये तथा लगभग 1000 साधर्मियों ने प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मलाभ लिया।

शिविर में **नागपुर (नेहरू पुतला)** में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पं. विपिनजी शास्त्री नागपुर, पं. मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पं. रवीन्द्रजी महाजन, पं. साकेतजी शास्त्री जयपुर, पं. अभयजी शास्त्री बकस्वाहा, पं. भूषणजी विटालकर शेघाट, पं. निकुंज सिंघई नागपुर, पं. अक्षयजी उभेगांव, विदुषी स्वर्णलताजी मंगलायतन, पं. नीलेशजी एवं पं. केविनजी शाह मुम्बई, **छिन्दवाड़ा** में पं. उत्तमचंदजी सिवनी, पं. नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, ब्र.चेतनाबेन देवलाली, पं. विनीतजी शास्त्री ग्वालियर एवं पं. रूपेन्द्रजी जैन छिन्दवाड़ा, **करेली** में पं. कमलेशजी शास्त्री मौ, पं. अगमजी एवं पं. अजयजी कानपुर, **सिवनी** में पं. अनुभव करेली एवं पं. अंशुलजी पारेख दुर्ग, **अकोला** में पं. महावीरजी मांगुलकर कारंजा, पं. दिविजजी सेठी झालरापाटन एवं पं. अनेकांतजी कारंजा, **काटोल** में पं. पंकजजी संगई हिंगोली, **चंद्रपुर** में पं. मधुवनजी मुजफ्फरनगर एवं पं. सुकुमारजी पाटील कोल्हापुर, **होशंगाबाद** में पं. गौरवजी शास्त्री बडौत एवं पं. प्रीतमजी शाह डडूका, **शहपुरा-भिटोनी** में पं. चैतन्यजी शास्त्री एवं पं. आत्मप्रकाशजी शास्त्री खड़ैरी, **उभेगांव** में पं. रतनलालजी होशंगाबाद एवं पं. नवीनजी शास्त्री उज्जैन, **नरसिंहपुर (कंदेली)** में पं. आशीषजी शास्त्री दूनी एवं पं. अपूर्वजी इटावा, **नरसिंहपुर (सिटी)** में पं. वैभवजी शास्त्री, **यवतमाल** में पं. निशांतजी शास्त्री वारासिवनी एवं पं. करन दिगम्बरे कोल्हापुर, **बोरगांव मंजू** में पं. रवीन्द्रजी मसलकर अम्बाड एवं पं. अतीशजी जोगी औरंगाबाद, **मुर्तिजापुर** में पं. निशांत पाटील कोल्हापुर एवं पं. प्रदीपजी धोत्रे कोल्हापुर, **नेरपिंगलई** में पं. नितिनजी शास्त्री इन्दौर एवं पं. आशीषजी महाजन वस्मतनगर, **डोभी** में पं. मयंकजी शास्त्री अमरमऊ एवं पं. अंकुरजी जैन मड़देवरा, **बाबई** में पं. दीपकजी शास्त्री खनियांधाना, **परासिया** में पं. नीरजजी शास्त्री नौगामा एवं पं. अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **पाँढूर्ना** में पं. पीयूष सिंगतकर चंद्रपुर एवं पं. शुभमजी जैन खनियांधाना, **चिचोली** में पं. सुमितजी शास्त्री उभेगांव एवं पं. अनुरागजी जैन उभेगांव, **चाँद** में पं. आकेशजी जैन उभेगांव, **पिपरिया (इतवारी बाजार)** में पं. शैलेन्द्रजी शास्त्री उदीमोड़, **पिपरिया (तारण-तरण)** में पं. सचिनजी शास्त्री सागर, शैदुरजनाघाट में पं. पवनजी शेंडे शिरपुर, **हिवरखेड** में पं. सूरजजी मगदुम कोल्हापुर, **गणेशपुर** में पं. जयेश रोकड़े मालेगांव, **बरमान** में पं. सनतजी शास्त्री बकस्वाहा एवं पं. निशुजी शास्त्री मड़देवरा, **चांदामेटा** में पं. धवलजी शेठ मुम्बई, **घोड़ाडोंगरी** में पं. प्रतीकजी शास्त्री मुम्बई, **आर्वी** में पं. शैलेन्द्रजी जैन जयपुर, **चांदुररेलवे** में पं. अतुलजी शास्त्री नौगामा, **जामठी** में पं. संदेशजी बोरालकर कलमनूरी, **शेन्दोला खुर्द** में पं. अक्षयजी वाडकर मिरज, **रामटेक** में विदुषी सुधाबेन उभेगांव एवं विदुषी दीक्षा जैन उभेगांव, **पाड़ा** में पं. आदेशजी बोरालकर सेनगांव, **मोर्शी** में पं. सतीशजी बोरालकर डोनगांव, **वरुड** में पं. कुलभूषणजी वोकले मालेगांव, **जरुड** में पं. अजयजी गोरे फालेगांव, **नागपुर (तारण-तरण)** में पं. निलयजी शास्त्री बरायठा, पं. पंकजजी शास्त्री बमनी, **धरनगांव** में पं. विवेकजी गड़ेकर हिवरखेड़, **कुंडा** में पं. सुदीपजी शास्त्री जबेरा एवं **करकबेल** में पं. आशीषजी शास्त्री सिलवानी, पं. संयमजी शास्त्री सिलवानी के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

दिनाँक 20 जून को **सामूहिक समापन समारोह** की अध्यक्षता डॉ.सुधीरजी सिंघई नरसिंहपुर (संभागीय अध्यक्ष-दि.जैन महासमिति) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री संजीवजी पाटनी छिन्दवाड़ा, श्री यशवंतजी गोहिल (सहा. आयकर आयुक्त नागपुर), श्री पुरुषोत्तमजी रेड्डी नागपुर, श्री सुभाषजी दिगम्बर होशंगाबाद, श्री नरेशजी सिंघई नागपुर, सौ.बरखा पिंचा आदि महानुभाव मंचासीन थे।

अन्त में दीक्षांत उद्बोधन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने दिया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल करेली ने तथा आभार प्रदर्शन पण्डित मनीषजी सिद्धांत ने किया।

शिविर की सफलता में युवा फैडरेशन द्वारा गठित टीम के निदेशक डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित जितेन्द्रजी राठी नागपुर एवं कार्यकारी निदेशक पण्डित प्रवेशजी भारिल्ल करेली थे। इस शिविर के संयोजक विदर्भ विभाग में पण्डित धवलजी गांधी नातेपुते एवं पण्डित पंकजजी दहातोंडे परली तथा महाकौशल विभाग में पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा थे।

3. सिलवानी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक १ से ९ मई तक श्री तारण-तरण दि.जैन समाज सिलवानी द्वारा शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन दिनाँक ३० अप्रैल को श्री तारण-तरण चैत्यालय सिलवानी में हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्री प्रहलादकिशोरजी उदयपुरा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित शिखरचंदजी विदिशा एवं विशिष्ट अतिथि श्री कुसुमकांतजी सागर मंचासीन थे। मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली ने तथा संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी ने किया।

शिविर में भोपाल, रायसेन, सिलवानी, विदिशा, सागर एवं होशंगाबाद जिलों के ३५ स्थानों पर एक साथ शिविर के माध्यम से विद्वानों ने ज्ञान गंगा प्रवाहित की। जिसके अन्तर्गत **सिलवानी (तारण-तरण चैत्यालय)** में पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित पंकजजी शास्त्री हिंगोली, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी, **देहगाँव** में पण्डित सुमितजी ध्रुवधाम छिंदवाड़ा एवं पण्डित सनतजी बकस्वाहा, **उदयपुरा** में ब्र.सुधाबहिनजी छिंदवाड़ा एवं पण्डित वैभवजी शास्त्री डडूका, **विदिशा (किला अन्दर)** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री कोलारस, **विदिशा (तारण-तरण चैत्यालय)** में पण्डित भावेशजी शास्त्री उदयपुर, **गंजबासौदा** में पण्डित अशोकजी शास्त्री बकस्वाहा एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सिलवानी, **सिरोंज** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री दिल्ली, **ग्यारसपुर** में पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, **भोपाल (चौक)** में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित गौरवजी शास्त्री मेरठ, पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड एवं पण्डित संयमजी शास्त्री सिलवानी, **भोपाल (अशोका गार्डन)** में पण्डित तन्मयजी शास्त्री, **भोपाल (कोहेफिजा)** में पण्डित संदेशजी शास्त्री बोरालकर, **बैरसिया** में पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ, **मंडीदीप**

में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, **बीना** में पण्डित प्रीतमजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक, **खुरई (पार्श्वनाथ जिनालय)** में पण्डित अभिषेकजी मंगलायतन छिंदवाड़ा, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री दमोह, **खुरई (तारण-तरण चैत्यालय)** में पण्डित सूरजजी शास्त्री मगदुम, **सागर (तारण-तरण चैत्यालय)** में पण्डित आकेशजी शास्त्री छिंदवाड़ा एवं पण्डित सुदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम जवेरा, **सागर (परकोटा)** में पण्डित पंकजजी शास्त्री बकस्वाहा, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर एवं पण्डित रॉकीजी शास्त्री बांसवाड़ा, **सागर (मकरोनिया)** में पण्डित शशांकजी शास्त्री सागर, **वनखेड़ी** में पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, **होशंगाबाद (तारण-तरण चैत्यालय)** में ब्र.रवि भैया ललितपुर, पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली एवं पण्डित सचिनजी शास्त्री भगवां, **इटारसी** में पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री दिल्ली ने महती धर्म प्रभावना की।

शिविर में तीनों समय बालकक्षा में जिनागम प्रवेश एवं लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका, प्रौढकक्षा में तत्त्वज्ञान पाठमाला, नयचक्र, छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामर स्तोत्र, क्रमबद्धपर्याय तथा प्रवचनों में समयसार, ममलपाहुड, ज्ञानसमुच्चयसार, मालारोहण, रत्नकरण्डश्रावकाचार आदि ग्रंथों का लाभ मिला। सायंकाल भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

शिविर में लगभग 20 हजार लोगों ने लाभ लिया तथा अंतिम दिन 3460 शिविरार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षा दी।

शिविर में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, पण्डित टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर एवं आचार्य अकलंक जैन न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा का सराहनीय सहयोग रहा।

शिविर का समापन समारोह दिनाँक ९ मई को हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ.विद्यानंदजी जैन विदिशा ने की। मुख्य अतिथि श्री मलूकचंदजी जैन विदिशा व प्रभारी प्रतिनिधि श्री सुधीरजी सहयोगी रहे। सभा का संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री ने किया।

4. नौगाँव-छतरपुर (म.प्र.) : श्री १००८ आदिनाथ दि.जैन मंदिर नौगाँव के तत्त्वावधान में दिनाँक १० से १८ मई तक जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में बुन्देलखण्ड की धरा पर १३ अनछुए स्थानों को चुना गया, जहाँ लगभग १५०० लोगों ने आध्यात्मिक लाभ लिया।

शिविर में पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित आशीषजी शास्त्री मडावरा, पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित सौरभजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित भावेशजी शास्त्री, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित रजितजी शास्त्री, पण्डित सनतजी शास्त्री, पण्डित शनिजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित अर्पितजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला।

शिविर का समापन समारोह दिनाँक १८ मई २०१० को खजुराहो (धर्मशाला) में श्री शिखरचंदजी जैन (अध्यक्ष-दि.जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र कमेटी, खजुराहो), श्री विनोदकुमारजी जैन (मंत्री), श्री शांतकुमारजी जैन (उपाध्यक्ष), श्री राकेशजी जैन एवं श्री सुनीलजी जैन

इंजीनियर आदि के सानिध्य में संपन्न हुआ।

शिविर के संयोजक पण्डित मोहितजी शास्त्री एवं पण्डित राहुलजी शास्त्री थे।

5. अलवर (राज.) : अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा अलवर द्वारा द्वितीय बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन तीन चरणों में किया गया।

प्रथम चरण दिनाँक १६ से २५ मई, द्वितीय चरण दिनाँक २१ से ३० मई एवं तृतीय चरण ६ से १४ जून तक रखा गया। तीनों चरणों में अलवर, दौसा, भरतपुर, सवाईमाधोपुर, जयपुर, टोंक, बूंदी एवं झालावाड जिले के कुल ३५ स्थानों पर ३६ विद्वानों के माध्यम से लगभग २५०० साधर्मी लाभान्वित हुये।

शिविर का उद्घाटन समारोह श्री रत्नत्रय दि.जैन मंदिर, चेतन एन्क्लेव में हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की। मुख्य अतिथि पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ तथा विशिष्ट अतिथि पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा थे। ध्वजारोहण श्री अनिलजी जैन स्वस्तिक टाइसन्स अलवर ने किया।

इस आयोजन में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर एवं आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा के विद्वानों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। स्थानीय विद्वानों में पण्डित अरुणजी शास्त्री, पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री एवं पण्डित अजितजी शास्त्री का लाभ मिला।

शिविर का आयोजन श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर एवं श्री दि.जैन साहित्य प्रकाशन समिति अलवर के सहयोग से किया गया।

शिविर का समापन समारोह कला भारती रंगमंच अलवर पर किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री महावीरप्रसादजी जैन-थानेदार साहब अलवर (अध्यक्ष - श्री दि.जैन साहित्य प्रकाशन समिति) ने की। मुख्य अतिथि पण्डित नागेशजी जैन पिडावा एवं विशिष्ट अतिथि श्री टी.सी.जैन एडवोकेट भरतपुर, श्री जिनेन्द्रजी जैन जयपुर एवं श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर थे।

सम्पूर्ण शिविर पं.अजितजी शास्त्री अलवर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। **- शशिभूषण जैन**

6. अमरमऊ (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 22 से 29 अप्रैल तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के आयोजकत्व तथा श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल अमरमऊ के तत्त्वावधान में बुन्देलखण्ड के विभिन्न 25 स्थानों पर ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

दिनाँक 22 अप्रैल को शिविर का उद्घाटन श्री प्रमोदकुमारजी मोदी सागर ने तथा ध्वजारोहण श्री हुकुमचन्दजी जैन अमरमऊ ने किया।

इस शिविर में पण्डित नितिनजी खड़ैरी, पण्डित विवेकजी सागर, पण्डित अभिषेकजी जोगी गजपंथा, पण्डित राहुलजी दमोह, पण्डित राहुलजी नौगाँव, पण्डित मोहितजी नौगाँव, पण्डित विकासजी इंदौर, पण्डित विवेकजी मड़देवरा, पण्डित दीपकजी मड़देवरा, पण्डित मयंकजी अमरमऊ, पण्डित वीरेन्द्रजी बकस्वाहा, पण्डित आशीषजी मड़ावरा, पण्डित नवीनजी उज्जैन, पण्डित सुदीपजी अमरमऊ, पण्डित अनेकांतजी अमरमऊ, पण्डित विक्रांतजी भगवां, पण्डित विवेकजी अमरमऊ, पण्डित सचिनजी भगवां, पण्डित सनतजी बकस्वाहा एवं पण्डित सचिनजी सागर का प्रवचन, कक्षाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लाभ मिला।

शिविर का सामूहिक समापन 29 अप्रैल को श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर अमरमऊ में सम्पन्न हुआ, जिसमें शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा विभिन्न स्थानों से आए हुये छात्रों को श्री सुखानन्दजी जैन शाहगढ की ओर से पुरस्कार दिये गये। शिविर में लगभग 1425 विद्यार्थियों तथा 750 साधर्मियों ने लाभ लिया। सम्पूर्ण शिविर पं. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर तथा पं. धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इस शिविर के संयोजक पं. दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ तथा पं.सौरभजी शास्त्री खड़ैरी थे।

7. उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरणमगरी सेक्टर-11 में दिनाँक 30 मई से 6 जून तक श्री महावीर समवशरण वेदी प्रतिष्ठा एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित राजकुमारजी बांसवाड़ा, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों एवं प्रौढ कक्षाओं का लाभ मिला।

बाल कक्षायें डॉ. महावीरप्रसादजी जैन के निर्देशन में पण्डित संजयजी शाह परतापुर, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित आशीषजी टीकमगढ, पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, पण्डित अश्विनजी नानावटी, पण्डित हेमन्तजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर के सहयोग से संचालित की गयीं।

विधान के संपूर्ण कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलकुमारजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर एवं श्री रमेशचंदजी सनावद ने संपन्न कराये।

8. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 15 से 22 जून तक श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित प्रथम बाल संस्कार शिविर अत्यंत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल परिसर में आयोजित इस शिविर में 8 से 16 वर्ष तक के 280 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इनको पूजन विधि, जैन तत्त्वज्ञान, सदाचार एवं मोक्षमार्ग की शिक्षा चारों अनुयोगों के माध्यम से दी गई।

शिविर में पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा एवं पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री प्रसन्नकुमारजी जैन जबलपुर थे। संचालन में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं ज्ञान चेतना मंडल के सभी सदस्यों का अपूर्व सहयोग रहा।**– मनोजकुमार जैन**

9. अजमेर (राज.) : यहाँ सीमंधर जिनालय में दिनाँक 22 से 30 जून तक वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के आयोजकत्व में बीसवें बाल एवं युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित

जयेशजी शास्त्री उदयपुर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री रवीन्द्रकुमारजी (चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजीतकुमारजी पाटनी, डॉ.डी.सी.जैन एवं श्री नरेन्द्रजी जैन मंचासीन थे।

10. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दिनाँक 1 से 8 मई तक पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर के पूर्व लगे इस शिविर में लगभग 600 बालकों ने धर्मलाभ लिया। इस शिविर में मुम्बई के अतिरिक्त महाराष्ट्र के अनेक गांवों से सैंकड़ों साधर्मीजनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

11. जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सैक्टर-7 में दिनाँक 30 मई से 13 जून तक ग्यारहवें बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजेशजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित मनीषजी कहान जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला तथा दोनों समय पण्डित नवीनजी शास्त्री फिरोजाबाद द्वारा बालकक्षा ली गयी।

श्री नथमलजी झांझरी परिवार द्वारा आयोजित इस 11वें बाल संस्कार शिविर में शताधिक साधर्मियों एवं बच्चों ने धर्मलाभ लिया।

दिनाँक 13 जून को समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह रखा गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित विमलकुमारजी जैन बनेठावालों ने की।

ज्ञातव्य है कि यहाँ पिछले 10 वर्षों से प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालीन बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्य में पण्डित राजेशजी शास्त्री का प्रयत्न विशेष सराहनीय है।

12. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 6 से 13 जून, 2010 तक श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, भिण्ड द्वारा जैन संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा प्रेरित यह शिविर इन्दौर के अनेक स्थानों पर लगाया गया, जिसके अन्तर्गत **साधना नगर मंदिर** में पण्डित अनुरागजी शास्त्री, पण्डित अक्षयजी एवं पण्डित सुजलजी, **जैन कॉलोनी मंदिर** में पण्डित अशोकजी बकस्वाहा एवं पण्डित महेशजी भोपाल, **मोदी की नसिया** में सुजल दीदी उज्जैन, **गोयल नगर जिनालय** में पण्डित संजयजी बांसवाड़ा, **स्वाध्याय भवन** में पण्डित नितुलजी शास्त्री एवं पण्डित चिन्मयजी मंगलायतन, **गांधी नगर जिनालय** में पण्डित विनीतजी एवं पण्डित अशोकजी बकस्वाहा, **राजमौहल्ला जिनालय** में पण्डित शौर्यजी शास्त्री कोटा, **गांव पालिया** में पण्डित आशीषजी भगवां तथा **गांव बालोद** में पण्डित नवीनजी उज्जैन ने महती धर्मप्रभावना की।

इस शिविर में सैकड़ों साधर्मियों एवं बच्चों ने धर्मलाभ लिया। बच्चों को नि:शुल्क किट के साथ-साथ नियमित पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

इस शिविर के प्रमुख संयोजक श्री विजयजी बड़जात्या एवं श्री पदमजी पहाड़िया थे। इसके अतिरिक्त पण्डित नितुलजी शास्त्री का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। **– विजय बड़जात्या**

170 तीर्थङ्कर महामण्डल विधान संपन्न

मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ गोल चौराहा स्थित श्री 1008 शांतिनाथ जिनालय में श्री नरसिंगपुरा दिगम्बर जैन समाज द्वारा दिनाँक 10 से 14 जून तक श्री 170 तीर्थङ्कर महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर के ग्रंथाधिराज **समयसार** पर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के **170 तीर्थङ्कर मण्डल विधान** पर दोनों समय प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के **समयसार** पर मार्मिक प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं बालकक्षा का आयोजन किया गया। रात्रि में प्रवचन के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। अंतिम दिन इंद्र सभा के माध्यम से विधान संबंधी सुन्दर तत्त्वचर्चा प्रस्तुत की गई।

जिनमंदिर के शिखर पर कलशारोहण श्री हीरालालजी जैन माऊखेड़ीवाले परिवार द्वारा तथा ध्वजारोहण श्री कन्हैयालालजी जैन कुचड़ौदवाले परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मंदिर के सिंहद्वार पर धर्मकलश की स्थापना श्री कैलाशचन्दजी कन्हैयालालजी कुचड़ौद ने तथा वेदी पर चंवर स्थापना श्री बाबूलालजी दयालचन्दजी कुचड़ौद परिवार ने की।

आयोजन में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज के लगभग 4 हजार लोगों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर के निर्देशन में पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री बड़कुल ने संपन्न कराया। सह-विधानाचार्य पण्डित अरविन्दकुमारजी जैन मन्दसौर थे।

जैन भूगोल पर विशेष व्याख्यान

मुम्बई : यहाँ जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा भारतीय विद्या भवन में दिनाँक 11 जुलाई को जैन भूगोल एवं विश्वदर्शन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा का उक्त विषय पर रोचक एवं सरल शैली में प्रमाण सहित, अत्यंत सारगर्भित, मार्मिक, तार्किक, आगमानुसार व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम में पण्डितजी की प्रवचन शैली से परिचित श्रोताओं की उपस्थिति भी आश्चर्यकारक थी; स्टडी सर्किल के विगत 25 वर्षों के एक दिवसीय कार्यक्रम के इतिहास में यह अत्यंत सफल कार्यक्रम रहा। पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने लगातार 3.5 घंटे तक प्रवचन किया, जिसका लगभग 600-700 लोगों ने लाभ लिया।

स्थानीय समाज ने भविष्य में भी पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ लेने की भावना व्यक्त की।

शिविर एवं समयसार महामंडल विधान संपन्न

दिल्ली : यहाँ दिलशाद गार्डन में दिनाँक 12 से 20 जून तक आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री समयसार परमागम महामंडल विधान संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी-श्रीमती सुशीलाजी एवं श्री वैभव-श्रीमती स्वाति जैन राजपुर रोड़ दिल्ली थे।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजमलजी पवैया भोपाल, पण्डित लालजीरामजी सोनागिर, पण्डित बसंतजी बड़जात्या सोनागिर, डॉ. विनोदजी शास्त्री विदिशा, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, श्री अनुभवजी जैन गुना आदि के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

स्थानीय विद्वानों में डॉ. सुदीपजी शास्त्री, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी गोयल, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर आदि का भी मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

अन्तिम दिन आगन्तुक अतिथियों का आभार प्रदर्शन एवं सम्मान समारोह संपन्न हुआ, जिसके अन्तर्गत कविवर पण्डित राजमलजी पवैया को **कविसम्राट**, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर को **ज्ञानरत्न** एवं पण्डित विमलचंदजी झांझरी को दिल्ली जैन समाज की ओर से **विद्वत् रत्न** की उपाधियुक्त अभिनन्दन-पत्र भेंटकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के 2700 हिन्दी प्रवचनों की डी.वी.डी. सेट का विमोचन पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन के करकमलों से किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में विधानाचार्य डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा ने संपन्न कराये।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित अशोकजी शास्त्री, श्री नीरजजी जैन, श्री सुरेन्द्रजी जैन मिन्टू एवं श्री सुरेन्द्रजी शास्त्री के संयोजन में सम्पन्न हुये।

उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री परतापुर (बांसवाड़ा) की सुपुत्री **सुश्री नेहा जैन** ने संस्कृत विद्यालय गनोडा में अध्ययन करते हुये माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज. अजमेर की वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा-2010 में **संभागीय स्तर** की वरीयता सूची में 82.77 प्रतिशत अंक अर्जित कर **प्रथम स्थान** प्राप्त किया है।

वीतराग-विज्ञान परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के नवीन सत्र के छात्रों का –

परिचय सम्मेलन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि.जैन मंदिर फागीवाला आमेर में दिनाँक ११ जुलाई को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के नवीन छात्रों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री अजितकुमारजी तोतुका, श्री शांतिलालजी अलवर, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि मंचासीन थे। इन सभी का मार्गदर्शन छात्रों को प्राप्त हुआ।

परिचय के क्रम में पण्डित आकाशजी शास्त्री एवं पण्डित रजितजी शास्त्री ने शास्त्री तृतीय वर्ष, पण्डित अभिजीतजी पाटील, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री ने शास्त्री द्वितीय वर्ष, पण्डित सनतजी शास्त्री एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री ने शास्त्री प्रथम वर्ष, पण्डित निलयजी शास्त्री एवं पण्डित कुलभूषणजी शास्त्री ने प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष तथा पण्डित बाहुबलीजी शास्त्री एवं प्रशांतजी शास्त्री ने प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष का परिचय दिया। परिचय सम्मेलन के मध्य में शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों द्वारा 'बुन्देलखण्ड की पाठशाला' नामक लघु प्रहसन भी प्रस्तुत किया गया।

सभा का सफल संचालन वीरेन्द्र बकस्वाहा, जयेश जैन उदयपुर एवं भावेश जैन उदयपुर ने किया। कार्यक्रम के संयोजन में शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का अपूर्व योगदान रहा।

सम्मेलन से पूर्व आमेर के प्राचीन जैन मंदिरों की सामूहिक वन्दना एवं जिनेन्द्र पूजन का भी कार्यक्रम रखा गया।

दम्पत्ति शिविर एवं विधान सम्पन्न

लूणदा-उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 25 से 27 मई तक सकल दि.जैन समाज लूणदा द्वारा राजस्थान का प्रथम दम्पत्ति शिविर एवं 64 ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित सुनीलजी नाके, पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री, पण्डित संदीपकुमारजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अश्विनजी शास्त्री, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में 15 दम्पत्तियों एवं 150 अन्य लोगों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर का संचालन पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा ने किया।